रिकॉर्ड :– भोलेनाथ से निराला..... ओम् शांति। ये है शिवबाबा की महिमा में गीत। कल वाला गीत भी महिमा का था और जो गीत बॉम्बे वालों ने बनाया है– कितना मीठा, कितना प्यारा, शिव भोला भगवान, ये तीनों गीत अच्छे हैं। इन्हों को ठीक बनवाए, फिर अच्छा ऑर्चेस्ट्रा में भर सकते हैं, जो मनुष्य सुनकर समझे कि इन्हों को बरोबर मिला है। इन सभी रिकॉर्ड्स का अर्थ भी शिवबाबा बैठ समझाते हैं। ये भी अभी रिकॉर्ड्स निक(ले) हैं अपने लिए। जैसे बाबा ने समझाया है कि हर एक आत्मा में रिकॉर्ड भरा हुआ है। 84 जन्मों का पार्ट है। तो मिसाल देने लिए वो चीज़ें भी खड़ी हो गई हैं। अब बाबा बच्चों को बैठ आदि–मध्य–अंत का राज़ बताते हैं। अन्य तो कोई विद्वान–पंडित नहीं जो इस सृष्टि के आदि–मध्य–अंत को जानता हो। तुम समझाए सकते हो, सृष्टि की आदि कैसे होती है, फिर मध्य में कैसे बाबा की प्रवेशता हुई। जैसे उस ड्रामा में बीच में रिसेस मिलती है वैसे इसमें रिसेस नहीं होती; परन्तु माया की प्रवेशता होती है। फिर नम्बरवार अन्य धर्म कैसे स्थापन होते हैं, इन बातों को कोई नहीं जानते। बाबा फिर भी बुजुर्ग है। बाप ने समझाया है कि मैंने इस बूढ़े तन में बहुत जन्मों के अंत में, वानप्रस्थ अवस्था में मैंने प्रवेश किया है तुमको समझाने लिए। दिन–प्रतिदिन बाप तुमको गुह्य ते गुह्य समझाते हैं। जब तुम भी समझने लायक बनते हो। राजविद्या में भी पहले छोटी विद्या पढ़ते–2 कपाट खुलते जाते हैं तां कि बड़ी विद्या को भी ग्रहण कर सकते हैं। यहाँ भी पहले इतना गुह्य ज्ञान नहीं था, इतना तुम उठाय नहीं सकते थे। प० सर्वव्यापी है, आत्मा प० है, गीता का भगवान कृष्ण है– इन बातों में तुम फँसे हुए थे। वो झट छूट नहीं सकता था। जितना–2 तुमको समझाते आए, तेरी बुद्धि का ताला खुलता गया, सो भी नम्बरवार। अब तुम इन गीतों का अर्थ भी समझते हो। गीत सब उन नाटक वालों के हैं। वो तो हैं आर्टीफिशल। बाप रियल अर्थ समझाते हैं। तो इन गीतों से काम लेते हैं। इनमें अपना ज्ञान लागू रहता है। जैसे एक गीत है, भारत का मदार तुम बच्चों पर है, तुम इनके मालिक (नवाब) बनने हो। वो इसका अर्थ अपने तरफ लगाते हैं। समझते हैं, हम मालिक बने हैं, हम भारत को ऊँच बनाएँगे। यहाँ हम पाण्डव कहते हैं, हम भारत को स्वर्ग बनाएँगे। वो तो ड्रामा के आदि–मध्य–अंत को जानते नहीं, न ये जानते कि कलियुग बाद सतयुग आना है। हमने सा० किया है कि बरोबर विनाश होना है। तो विनाश बाद स्थापना भी ज़रूर है। स्थापना का सा० है तो विनाश भी ज़रूर है। तुमको हेविन का सा० कौन कराते हैं? ज़रूर जो स्थापन करने वाला है। प० ही तो नई दुनिया रचेंगे ना। वहाँ गॉड–गॉडेज का राज्य था। वो मनुष्य सृष्टि भी ज़रूर वृद्धि को पाती है। 33 करोड़ देवताएँ गाए हुए हैं। ल०ना०, रा०कृ०– ये सब देवताएँ थे तां अब नहीं है। तो हिस्ट्री मस्ट रिपीट। फिर से कलियुग बाद सतयुग आना चाहिए। ये बातें जब तुम समझाओ तब उनको रीकलेक्ट हो (याद पड़े) कि बरोबर आदि सनातन देवी–देवता धर्म था, भगवती–भगवान थे। उसको स्वर्ग कहा जाता है। अब वो स्वर्ग नहीं है। सतोप्रधान दुनिया तमोप्रधान भी बनेगी ना! तुम जान गए हो तो समझाने में भी मज़ा आता है। .... तो ऐसे नहीं कहता, भारत 5000 वर्ष पहले स्वर्ग था। मनुष्यों ने तो सुना है, सतयुग को लाखों वर्ष हुए। अब तुम बताते हो कि सिर्फ 5000 वर्ष हुए देवताओं का राज्य था, और सभी धर्म बाद में आए हैं। तो ये सब रीकलेक्ट करना है। जैसे बाबा से जीवन कहानी पूछते हैं तो बाबा को रीकलेक्ट करनी पड़ती है ना। यहाँ हम शिवबाबा की बायोग्राफी बताते हैं। वो तो आसुरी मनुष्यों की बायोग्राफी लिखते हैं। ये है दैवी सम्प्रदाय की,

जो गाई जाती है। आज से 5000 वर्ष पहले ल०ना० का राज्य था। उसके पहले क्या था? कलियुग। अब वही कलियुग है। तो ज़रूर इसके बाद सतयुग होगा ना। तुमको भोलानाथ शिव ने सारा राज़ समझाया है, जिस पर ही गीत बने हुए हैं। ये नॉलेज और तो कोई दे न सके। ल०ना० को भी कैसे राज्य मिला? कलियुग अंत में तो कोई राजा–राणी भारत में नहीं थे, जिनका वर्सा मिला। न सोने के महल हैं। भारत तो कंगाल है। फिर धक से सतयुग आदि में इतना धन माल कहाँ से आ गया? इसको जादू का खेल कहेंगे ना। बरोबर बाबा जादूगर है, जो पतित दुनिया को पावन, कंगाल को एक ही जन्म में सिरताज बनाए देते हैं। जादूगर भी पैसे की रिद्धि–सिद्धि से लोगों को ठगते हैं। लोहे से सोना बनाते हैं। बाबा फिर सारे भारत को कंगाल मोहताज से एकदम वैकुण्ठ बनाए देते हैं। ये है ईश्वरी(य) रिद्धि–सिद्धि। वो तो झूठी रिद्धि–सिद्धि अल्पकाल की होती है, ये तो प्रैक्टिकल की बात है। सा० से देखते भी हैं। तो ज़रूर खुशी का पा(रा) चढ़ेगा ना। हम जानते हैं, बाबा स्वर्ग का मालिक बनाने लिए राजयोग सिखाए रहे हैं। भक्तिमार्ग में राजाई लिए योग नहीं सीखा जाता है, वहाँ तो दान–पुण्य किया जाता है। यहाँ बाबा राजयोग सिखाते हैं। इसमें दोनों नर–नारी चाहिए। ये स्कूल ऐसा है। बाप राजाओं का राजा बनाने लिए राजयोग सिखाए रहे हैं। कितना सहज है। अबलाएँ, कुब्जाएँ बैठ पढ़ती हैं। पुजारी पतित से अब पावन बन रही हैं। फिर क्या करेंगी? ऐसे तो नहीं मुक्तिधाम बैठ जाएँगी। फिर यहाँ आएँगी, जीवनबंध से जीवनमुक्ति में। अब तो सभी कंगाल हैं। सोना भी ले रहे हैं। बाकी क्या जाकर रहेगा? जमीन रहेगी। ऐसा इन्सॉलवेंट भारत फिर धक से कितना सॉलवेंट बनता है। जमीन, खाणियाँ सब भरतू हो जाएँगी। अब तो सब खाली, खोखला है। कहते हैं ना, सागर हीरे–जवाहरात ले आए। तो सागर से भी बहुत मल नहरों से बाहर निकलेंगे। खाणियों से भी ढेर निकलते रहेंगे। ये सब बच्चों में इस समय ही शिव भोलानाथ से वर्सा पाया है। शंकर के लिए तो दिखाते हैं कि आँख खोलने से विनाश हो गया। भोलानाथ तो उनको कहा जाता है, जो झोली भरे। झोली तो ज्ञान सागर शिव भरते हैं। वो है निराकार। शंकर तो आकारी है। उसको रचना कहेंगे। निराकार शिव की महिमा है– ऊँचा उनका नाम, ऊँचा उनका ठाँव। बाबा कहते हैं, मैं कालों का काल हूँ। मैं गाइड बनकर आया हूँ, मेरे पीछे सभी मच्छरों सदृश आवेंगे। आरंभ में तो बहुत थोड़े होते हैं फिर वृद्धि होती है। झाड़ सतोप्रधान से अवश्य तमो में आएँगे, तो उसका विनाश भी होना चाहिए, तब फिर चक्कर रिपीट हो। ये राज़ अनन्य बच्चे ही समझाए सकते हैं। और तो कोई जानते नहीं कि स्वर्ग में क्या था। ये खरी समझाणी बुद्धि में रहने से खुशी रहती है। है तो बहुत सहज। भारत सोने की चिड़ी थी। उन स्वर्गवासियों के चित्र भी रखे हैं। पूछेंगे, क्राइस्ट का चित्र कब का है? तो झट बताएँगे, 2000 वर्ष पहले क्राइस्ट आया था। वैसे देवताओं का राज्य भी 5000 वर्ष पहले था। अब नहीं हैं। वे ही अब शूद्र बने हैं। फिर अब शूद्र से ब्राह्मण बन रहे हैं। इन वर्णों पर समझाना भी सहज है। 84 जन्म हम चारों वर्णों में चक्कर लगाते हैं। यह अन्तिम ईश्वरी(य) जन्म है ब्राह्मणों का संगम पर। फिर देवता वर्ण में जन्म लेते हैं। देवता वर्ण से फिर क्षत्रिय वर्ण में 12 जन्म लेंगे; क्योंकि पुनर्जन्म लेते–2 वर्ण बदलते जाते हैं। हम ही इन वर्णों में ट्रांसफर होते हैं। पुनर्जन्म लेते–2 सतोप्रधान से सतो, फिर रजो, फिर तमो में जाते हैं। सबसे अलौकिक जन्म इस समय का है। अच्छे–2 बच्चों को तो ये बातें जैसे अंगुलियों पर याद रहती हैं। ये भी बाजोली है अथवा स्वदर्शन चक्कर। स्व आत्मा को अपने चक्कर का ज्ञान मिलता है कि हम कैसे 84 जन्म लेते हैं। विराट स्वरूप के भी छपे हुए चित्र

भी मिलते हैं। उनपर भी समझाए सकते हो। भारत की वृद्धि कैसे होती है? वर्णों में कैसे आते हैं? सो नाटक बना हुआ ही भारत पर है। बाकी तो सब बाई प्लांट्स हैं। हर एक को अपना धर्म प्रिय है; परन्तु हमारा धर्म सभी से वण्डरफुल है। और धर्म वाले इन वर्णों में नहीं आते हैं। न इन बातों को वो लोग समझेंगे, हमारे धर्म वाले ही समझेंगे। उन्हों को समझाए सकते हैं कि कैसे अब हम ब्राह्मण ईश्वरी(य) संतान हैं, फिर दैवी संतान बनेंगे, फिर क्षत्रिय संतान बनेंगे, फिर वैश्य, फिर शूद्र संतान बनेंगे। ये ज्ञान भी अभी हम ब्राह्मणों को है। ब्राह्मणों का ही तीसरा नेत्र खुलता है। हम शूद्र थे तो नहीं जानते थे। देवता बनेंगे तो भी पता न होगा। वहाँ दुर्गति होती नहीं। इस समय सारा दिन नॉलेज बुद्धि में फिरता रहे तो खुशी का पारा चढ़े। माया भुलाए देती है; इसलिए वो मज़ा नहीं रहता। यहाँ मुरझाने की तो बात नहीं है। वो समय आएगा जो बहुत जिज्ञासुओं को समझाने में सारा दिन बिज़ी हो जाएँगे। दान देते रहेंगे तो खुशी का पारा ऑटोमैटिकली चढ़ता रहेगा। जितना दान करेंगी खुशी चढ़ती जावेगी। बाप समझाते भी हैं कि किस–2 को समझाओ। एक तो वानप्रस्थियों को समझाओ, दूसरा मंदिरों में जाओ। ल०ना० का मंदिर बहुत फर्स्ट क्लास मंदिर है। ल०ना० के चित्र पर समझाना बहुत अच्छा है। उन पर लिखा भी हुआ है, गॉड फादरली बर्थ राइट। उन्हों को वर्सा मिला है गॉड का, तब गॉड–गॉडेज कहे जाते हैं। भगवान ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। उन्हों को प० से वर्सा मिला है। ल०ना० के मंदिर में भाषण करना सबसे अच्छा है; इसलिए बाबा ल०ना० के चित्र बनवाए रहे हैं। उनकी बायोग्राफी भी लिखेंगे तो मनुष्य समझे। जैसे कल्प पहले चित्र बनाए हैं वैसे ही बनावेंगे। हमारा पुरुषार्थ कल्प पहले मुआफिक चल रहा है। फिर भी कर्म तो करना है। बैठ नहीं जाना है। इसमें समझाने की मैनर्स चाहिए। बाबा, मम्मा और अनन्य बच्चों की प्रैक्टिस है। पहले इंडीविज्युअल समझाने की प्रैक्टिस करनी है। फिर जनरल भाषण करने का पुरुषार्थ करना है। सबमें समझाने की भी हिम्मत चाहिए। हर बात सीखी जाती है। योग से आयु बढ़ती है और ज्ञान से धन मिलता है। ये पाठशाला है, जहाँ मनुष्य से देवता बनते हैं। सतयुग में देवी–देवताएँ थे। अब नहीं हैं। तो फिर होने चाहिए। भगवान आए आप समान शांति का सागर, सुख का सागर बनाते हैं। हम दैवी गुण धारण करते हैं तो देवी–देवता बनते हैं। है तो बहुत सहज; परन्तु बड़े–2 आदमियों का उठाना बड़ा मुश्किल है। उन पर वाइलेंस की रिस्पॉन्सिबुलिटी है। वो उनमें ही बिज़ी है। इसलिए मुश्किल निकलेंगे। तुम्हारे पास देखो, कौन हैं– अहिल्याएँ, गणिकाएँ। तेरा नाम तब निकलेगा जब भीलनियों, गणिकाओं के सभा में भाषण करेंगी और वो सा० में जाएँगी। फिर (वो) बैठ सन्यासियों को ज्ञान देंगी। तेरा नामाचार तब बढ़ेगा जब लोएस्ट को ज्ञान दो। फिर वो बैठ विद्वानों को ज्ञान देंगी। एक दिन वो भी आएगा जो नीच ते नीच, ऊँच ते ऊँच को ज्ञान देंगी। ऊँच हैं इस समय महात्माएँ। उन्हों को तुम ही ज्ञान देंगी। सन्यासियों को तेरे आगे झुकना पड़ेगा। शक्तिसेना है ना। फिर तेरा बहुत नाम होगा। अभी तो हर बात में चींटी मार्ग है। फिर विहंग मार्ग होगा। जैसे मोटर पहले बनने में 3–4 महीने लेती थी, अब मिनट अ मोटर बनती है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग ...।
ॐ

मथुरा सेन्टर का फोन नम्बर है 382.